174
Chaithanya Mahaaprabhu
604

समाज विकासमाला

चैतन्य महाप्रभु

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ಚೈತನ್ಯ ಮಹಾಪ್ರಭು 1674

समाज-विकास-माला : १४

चैतन्य महाप्रभु

कृष्ण-भक्ति की कहानी

ಗಾಂಧಿ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ
ಪುಸ್ತಕ 174
ನಂ. 60.4
ತತ್ವ ಪ್ರಚಾರ ಕೇಂದ್ರ

लेखक
देवराज 'दिनेश'

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162. ... ROAD

सम्पादक
यशपाल जैन

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9145
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

१९५६

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

1614
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रख कर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

तीसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसन्द आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

चैतन्य महाप्रभु का नाम आपने सुना होगा। वह ऊंचे दर्जे के सन्त हुए हैं। बचपन से ही उनमें कृष्ण-भक्ति का बीज मौजूद था। वह धीरे-धीरे पनपता गया। उन्होंने घरबार छोड़ दिया। भक्ति से उन्होंने अपने को ऊपर उठाया। दूसरों का भला किया। उनकी इस कहानी में हम सबके लिए बड़ी शिक्षा है।

हम चाहते हैं कि इस माला में ऐसी पुस्तकें अधिक-से-अधिक दें। हम ऊंचे होंगे तो हमारा देश भी ऊंचा होगा।

इस माला की सब किताबें बड़ी सावधानी से निकाली जा रही हैं। आप इन्हें अवश्य पढ़ें और दूसरों को भी पढ़वायें। भली बातें जितने आदमियों तक पहुंचें, अच्छा है।

—सम्पादक

चैतन्य महाप्रभु

: १ :

चैतन्य महाप्रभु हमारे देश के बहुत बड़े महात्मा हुए हैं। उनका जन्म संवत् १५४२ विक्रमी की फाल्गुनी पूर्णिमा, होली के दिन बंगाल के नवद्वीप नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम पंडित जगन्नाथ मिश्र और माता का नाम शचीदेवी था।

पिता सिलहट के रहनेवाले थे। नवद्वीप में पढ़ने के लिए आये थे। बाद में वहीं बस गये। वहीं पर शचीदेवी से विवाह हुआ। एक के बाद एक करके उनके आठ कन्याएं पैदा हुईं और मरती गईं। फिर एक लड़का पैदा हुआ। भगवान की दया से वह बड़ा होने लगा। उसका नाम उन्होंने विश्वरूप रक्खा। विश्वरूप जब दस बरस का हुआ तब उसके एक भाई और हुआ। माता-पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। बुढ़ापे में एक और बालक को पाकर वे फूले नहीं समाये। कहते हैं, यह बालक तेरह महीने माता के पेट में रहा। उसकी कुँडली बनाते ही ज्योतिषी ने कह दिया था कि वह महापुरुष होगा। यही बालक आगे चलकर चैतन्य

महाप्रभु हुआ ।

बालक का नाम विश्वम्भर रखा गया । प्यार से माता-पिता उसे 'निमाई' कहते । जिनके घर बच्चे मर जाते हैं वे इसी तरह के बेसिर-पैर के नाम अपने बच्चों के रख देते हैं ।

एक दिन की बात है । बालक के स्वभाव की जांच करने के लिए पिता ने उसके सामने खिलौने, रुपये और भगवत्गीता रख दी । बोले, "बेटा, इनमें से कोई-सी एक चीज़ उठा लो ।"

बालक ने भगवत्गीता पसन्द की

बालक ने भगवत्गीता उठा ली। पिता समझ गये कि आगे चलकर यह बालक भगवान का बड़ा भक्त होगा। बात सोलह आने सच निकली। निमाई पंडित ने सारे देश में कृष्ण-भक्ति की गंगा बहा दी।

निमाई बहुत सुन्दर और चंचल स्वभाव के थे। उनके बचपन की लीलाओं को देखकर लोगों को कृष्ण की बाल-लीलाएं याद आ जातीं। नगर के सारे लोग उनको बहुत प्यार करते थे, पर अपनी शरारतों से वह सबको परेशान कर डालते।

माता-पिता चाहे कितने भी गरीब क्यों न हों, पर अपने बच्चे को सजाये बिना नहीं रहते। यही हाल जगन्नाथ मिश्र का था। जैसे-तैसे घर का खर्च चलता था। पर निमाई को सुन्दर वस्त्रों और गहनों से वे खूब सजाये रहते। गहनों में सोने की एक माला भी थी। एक दिन मौका पाकर एक चोर निमाई को उठा कर ले गया। उसके मन में गहनों के लिए लालच था। सोचता होगा कि किसी सुनसान जगह ले जाकर उन्हें मार डाले और गहने ले जाय। निमाई कंधे पर बैठे उसके माथे पर हाथ फेरने लगे और उससे प्यारभरी बातें करने लगे। उनका कमल-सा सुन्दर पैर चोर की छाती से टकरा रहा था। उनकी मीठी बातों को सुन

कर चोर के हृदय में ममता उमड़ आई और उसने अपना इरादा बदल दिया।

बहुत देर हो गई और बालक दिखाई न पड़ा तो घरवाले हैरान होकर उसे इधर-उधर ढूंढ़ने लगे। कोई गंगा-घाट की ओर दौड़ा, कोई बगिया की तरफ भागा। सभी लोग बड़े बेचैन और घबराये हुए थे। इसी बीच चोर उन्हें चुपचाप घर पर छोड़ गया। लौटने पर लोगों ने देखा कि बालक आंगन में खेल रहा है।

एक बार निमाई काले नाग से खेलते हुए पाये गये। उनके चारों ओर सांप कुँडली मार कर बैठा हुआ था और वह बड़े प्यार से उसके शरीर पर हाथ फेर रहे थे। लोग जब ढूंढ़ते हुए वहां पहुंचे तो सांप के साथ देखकर अवाक् रह गये। अब करें तो क्या करें! नाग से बालक को कैसे बचावें? उसी समय निमाई का ध्यान घबराई हुई अपनी माता की ओर गया और वह झट सांप की कुंडली से निकल कर माता से आकर चिपट गये। सांप अपने बिल में चला गया। लोगों को पक्का विश्वास हो गया कि हो न हो, इस बालक के शरीर में कोई महान आत्मा रहती है।

बचपन में निमाई का पढ़ने-लिखने में मन नहीं लगता था। शैतान लड़कों के वह नेता थे। गंगाजी

की रेत में खेलना, वैष्णवों को पूजा के समय तंग करना, उनकी पूजा का सामान खराब कर देना, यही उनका काम था।

उन दिनों देश में छुआछूत और ऊंच-नीच का भेद बहुत था। वैष्णव और ब्राह्मण अपने या अपने घर-वालों के ही हाथ का पका हुआ खाना खाते थे।

एक दिन एक ब्राह्मण निमाई के यहां आया। जगन्नाथ मिश्र ने उसकी बड़ी आवभगत की। शचीदेवी ने उन्हें सीदा दिया। ब्राह्मण ने चौका लीप-पोत कर

ब्राह्मण ने ध्यान के बाद आंखें खोलीं तो देखा, निमाई ने आकर खाने में हाथ डाल दिया है।

तैयार किया और खाना बनाया। खाने से पहले वह आंखें बन्द करके विष्णु भगवान को भोग लगाने लगा। तभी निमाई ने आकर उसकी थाली में से खाना खाना शुरू कर दिया। यह देखकर ब्राह्मण चिल्लाने लगा, "अरे, यह कौन बालक है ?"

यह सुनते ही मिश्रजी और शचीदेवी दौड़े आये। मिश्रजी ने निमाई को पकड़ लिया और उन्हें पीटना ही चाहते थे कि ब्राह्मण ने छुड़ा दिया।

मिश्रजी और शचीदेवी के आग्रह पर ब्राह्मण ने दूसरी बार भोजन तैयार किया। निमाई को अलग ले जाकर रस्सी से बांध दिया, पर भगवान को भोग लगाते समय फिर वही घटना घटी। निमाई रस्सी खोलकर आगये और थाली में से चावल खाने लगे। अबकी बार मिश्रजी के गुस्से का ठिकाना न रहा। निमाई की शरारतों से वैसे भी वह बहुत परेशान थे। मारने को लपके। ब्राह्मण ने अपनी कसम दिलाकर उन्हें रोक दिया। उसी समय पाठशाला से पढ़कर विश्वरूप आ गये। सबने मिलकर ब्राह्मण से फिर खाना बनाने का आग्रह किया। पर ब्राह्मण ने कहा, "आज भाग्य में भोजन नहीं है। मैं चना-चबैना खाकर सन्तोष कर लूँगा। आप दुःखी न हों।"

विश्वरूप ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, हमें इस बात से संतोष नहीं होगा। आप भोजन बनाइये, मैं निमाई का ध्यान रखूँगा।" ब्राह्मण मान गया। विश्वरूप और माता ने निमाई को रस्सी से बांधकर अपने पास बिठा लिया।

कहते हैं, जब ब्राह्मण ने भोजन बनाकर भगवान विष्णु को भोग लगाया तो भगवान चतुर्भुज रूप में उसके सामने आ खड़े हुए और बोले, "तुम्हारे बुलाने पर मैं बालक के रूप में दो बार तुम्हारे पास आया। पर तुम पहचान नहीं पाये। अब जो इच्छा हो, मांगो।"

ब्राह्मण गद्गद् हो गया। हाथ जोड़कर बोला, "प्रभु, मैं सचमुच मूढ़ हूं। आपको पहचान नहीं पाया। बस, मुझे यही वर दीजिये कि आपकी मूर्ति सदा मेरे हृदय में बसी रहे।"

विष्णु भगवान ने कहा, "ऐसा ही होगा।" और वह चले गये। ब्राह्मण ने बड़ी खुशी से भोजन किया। फिर वह निमाई को देखने गया। वह सो रहे थे। ब्राह्मण ने मन-ही-मन उन्हें प्रणाम किया और अपने घर लौट गया।

जिसके घर से जो कुछ मिलता, निमाई वही खा लेते। पड़ोसिन प्यार से उन्हें खिलातीं। कोई-कोई

कहतीं, "निमाई ब्राह्मण होकर हर किसी का छुआ खा लेता है।" निमाई हँसकर कहते, "हम तो बाल-गोपाल हैं। हमारे लिए ऊंच-नीच क्या! तू खिला, हम तेरा खा लेंगे।"

एक बार भाई को बुलाने वह पाठशाला गये। सुन्दर शरीर, घुंघराले बाल, चंचल स्वभाव। उनका रूप देखकर आचार्य ने पूछा, "विश्वरूप, यह तुम्हारा छोटा भाई है?"

"जी हां।"

आचार्यजी ने कहा, "बड़ा होनहार बालक है।" तभी से आचार्य के हृदय में उनकी सूरत बस गई। आगे चलकर आचार्य उनके बहुत बड़े भक्तों में हुए।

निमाई जितने शरारती थे, बड़े भाई उतने ही गम्भीर और अपने विचारों की दुनिया में मस्त रहने-वाले आदमी थे। विश्वरूप की उम्र इस समय १६-१७ साल की थी। माता-पिता विश्वरूप के विवाह की बात सोचने लगे, किन्तु उनकी लगन दूसरी ही ओर थी। मां-बाप ने ज़ोर दिया तो मौका पाकर एक दिन वह रात को घर से निकल गये और संन्यासी हो गये। बहुत ढूंढ़ने पर भी उनका पता न चला। मिश्रजी और शचीदेवी के दुःख की सीमा न रही। निमाई पर भी इस

घटना का बहुत असर पड़ा। वह भी अब गम्भीर रहने लगे।

: २ :

शरारतों से हटकर अब निमाई का मन पढ़ने की ओर झुका, पर मिश्रजी को उसमें रस न था। वह सोचते थे कि एक लड़का तो खो ही गया, कहीं दूसरा भी हाथ से न चला जाय। वह निमाई को पढ़ता देखते तो बहुत नाराज होते। पर निमाई जब पढ़ने पर ही तुले थे, तो उन्हें कौन रोक सकता था! वह पिता से छिपकर पढ़ते।

उनकी यह लगन देखकर शचीदेवी और पड़ौसिनों ने मिश्रजी को समझाया—वह बड़ा होनहार बालक है। गंवार बनाकर क्यों उसका जीवन खराब करते हो? मिश्रजी ने बात मान ली और उन्हें पाठशाला में पढ़ने भेज दिया। निमाई मन लगाकर पढ़ने लगे।

इस समय उनकी अवस्था ग्यारह वर्ष की थी। इस छोटी-सी उम्र में ही उन्होंने बहुत-कुछ पढ़ डाला। पिता अपने पुत्र की चतुराई की बातें सुन-सुन कर बहुत खुश होते।

पर भाग्य के आगे किसका बस चलता है ! एक दिन अचानक मिश्रजी को जोर का बुखार चढ़ा और कुछ ही दिनों में वह चल बसे।

घर पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। पर निमाई ने हिम्मत से काम लिया। अपने आपको तो सम्भाला ही, मां को भी धीरज बंधाया।

दुःखी मां का अब निमाई ही सहारा थे। पढ़ने से जो समय बचता उसमें वह माता की खूब सेवा करते।

व्याकरण के साथ-साथ अब वह और चीज़ें भी पढ़ने लगे। धीरे-धीरे उनके ज्ञान की चर्चा चारों ओर होने लगी। उनकी उम्र सोलह साल की हो चुकी थी। लोग उन्हें 'निमाई पंडित' कहने लगे।

निमाई के एक मित्र थे पं० रघुनाथ। वह उन दिनों एक पुस्तक लिख रहे थे। उनका विचार था कि इस पुस्तक को लिख लेने पर उस विषय का उनसे बड़ा विद्वान कोई नहीं होगा। तभी उन्हें पता लगा कि निमाई पंडित भी उसी विषय पर पुस्तक लिख रहे हैं। वह जानते थे कि निमाई इस विषय के पंडित हैं। वह उनके घर पहुँचे। रघुनाथ ने कहा, "सुना है तुम न्याय पर कोई पुस्तक लिख रहे हो।"

हँसते हुए निमाई ने कहा, "अजी, छोड़ो। तुम्हें किसी ने बहका दिया होगा। कहां मैं और कहां न्याय-जैसा कठिन विषय। मन-बहलाव के लिए वैसे ही कुछ लिख रहा हूं।"

"फिर भी मैं उसे सुनना चाहता हूं।" रघुनाथ ने ज़ोर देकर कहा।

"जैसी तुम्हारी इच्छा! चलो, गंगाजी पर नाव में सैर करेंगे और पुस्तक भी सुनायेंगे।"

दोनों गंगा-घाट पर पहुंचे और नाव में बैठकर घूमने लगे। निमाई ने अपनी पुस्तक पढ़नी शुरू की। सुनकर रघुनाथजी रोने लग गये।

निमाई ने हैरानी से पूछा, "क्यों, क्या हुआ? रो क्यों रहे हो?"

"निमाई, मेरी बरसों की मेहनत बेकार गई। तुम्हारी इस पुस्तक के सामने मेरी पुस्तक पर कौन ध्यान देगा? अपनी जिस पुस्तक पर मुझे इतना गुमान था, वह तो इसके सामने कुछ भी नहीं है।" रघुनाथ ने ठंडी सांस भरते हुए कहा।

निमाई हँसने लगे। बोले, "बस इतनी-सी बात के लिए परेशान थे!" यह कहकर उन्होंने झट अपनी

पुस्तक गंगाजी में फेंक दी। बोले, "यह तो एक पुस्तक है। मित्र के लिए मैं अपने प्राण भी दे सकता हूं।"

निमाई ने झट अपनी पुस्तक गंगाजी में फेंक दी।

उस दिन के बाद से फिर निमाई पाठशाला में पढ़ने नहीं गये। घर पर ही पिता और भाई की किताबों से पढ़ने लगे।

कुछ दिन बाद उन्होंने लड़कों को पढ़ाने के लिए एक पाठशाला खोली। धीरे-धीरे उसमें बहुत-से विद्यार्थी हो गये। उनमें कई तो उम्र में उनसे

बड़े थे। निमाई अपने विद्यार्थियों को खूब मेहनत से पढ़ाते और मित्र की तरह उनसे प्रेमभाव रखते।

माता के बहुत दबाव डालने पर उन्होंने पंडित बल्लभाचार्य की पुत्री लक्ष्मीदेवी से विवाह कर लिया। लक्ष्मीदेवी को वह बचपन से ही जानते थे।

इन्हीं दिनों नवद्वीप में एक पंडित आये। उन्हें अपने ज्ञान का बड़ा घमंड था, लेकिन निमाई के सामने उन्हें मुँह की खानी पड़ी। इससे निमाई का नाम और फैल गया। उनकी पाठशाला विद्यार्थियों से भरी रहती।

कुछ दिनों के लिए निमाई पूर्वी बंगाल की यात्रा पर गये। इसी बीच घर पर मामूली बुखार से लक्ष्मीदेवी की मृत्यु हो गई। बेचारी मां को उस समय धीरज बंधानेवाला कोई न था। लौटने पर निमाई को जब यह समाचार मिला तो वह बहुत दुखी हुए।

इसी तरह एक-दो बरस निकल गये। निमाई विद्वानों और माता की सेवा करते और अपनी पाठशाला में छात्रों को पढ़ाते। अपनी मां का वह बहुत मान करते थे। माता की आज्ञा और आग्रह से उन्होंने पंडित

सनातन मिश्र की कन्या विष्णुप्रिया से विवाह कर लिया। सूने घर में फिर चहल-पहल हो गई। विष्णुप्रिया के अच्छे स्वभाव के कारण धीरे-धीरे शचीदेवी और निमाई लक्ष्मीदेवी के विछोह का दुःख भूल-सा गये।

: ३ :

गया जाकर बहुत-से लोग अपने पितरों का श्राद्ध करते हैं। इस बार नवद्वीप से गया आनेवालों में निमाई भी थे। वह वहां जाकर अपने पिता का श्राद्ध करना चाहते थे। गया में इस समय बड़ी भीड़ थी। माने हुए सिद्ध-महात्मा वहां आये हुए थे। वहीं पर संन्यासी ईश्वरपुरी से निमाई की भेंट हुई। नवद्वीप में एक बार वह पहले भी मिल चुके थे। पर तब के और अब के निमाई में बड़ा अन्तर था। भेंट होते ही निमाई ने श्रद्धा से उनके चरण पकड़ लिये। संन्यासी ने उन्हें प्यार से आशीर्वाद दिया।

निमाई बोले, "स्वामी, संसार की गति के साथ यह जीवन इसी तरह बीत जायगा। अब हमें भी कृष्ण-भक्ति दीजिये।"

संन्यासी ने सरलता से कहा, "आप तो स्वयं कृष्ण

रूप हैं । पहुंचे हुए पंडित हैं। आपको कोई क्या दीक्षा देगा ?"

निमाई के बहुत जोर देने पर पुरी स्वामी ने उन्हें दीक्षा दे दी । ज्योंही निमाई के कान में मंत्र फूंका गया, वह बेहोश हो गये और उसी हालत में चिल्लाने लगे, "अरे प्यारे कृष्ण, तुम कहां हो ? मुझे भी अपने पास बुला लो ।" होश आने पर अपने साथियों से बोले, "भैया, तुम घर लौट जाओ । हम तो अब अपने कृष्ण के पास वृन्दावन जाते हैं ।"

पर पुरी स्वामी ने उन्हें समझाकर कहा, "वृन्दावन बाद में जाना । पहले नवद्वीप में कृष्ण-भक्ति की गंगा बहाओ । बुराइयों में फँसे अपने यहां के लोगों का उद्धार करो ।"

गुरु की आज्ञा से निमाई नवद्वीप लौट आये । बंगाल का यह इलाका उन दिनों गौड़ देश के नाम से प्रसिद्ध था । वहांपर मुसलमान बादशाह का राज्य था । राज्य की ओर से हर बड़े नगर में काज़ी की अदालत थी ।

गया से लौटने के बाद निमाई का मन पाठशाला में न लगा । वह हर समय कीर्तन में लीन रहने लगे । व्याकरण पढ़ाते-पढ़ाते श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन

करने लगते, फिर कृष्ण-वियोग में फूट-फूट कर रोने लगते। होश आने पर अपने छात्रों से कहते, "भैया, अब तुम्हें व्याकरण और न्याय जैसे रूखे शास्त्र पढ़ाना हमारे बस की बात नहीं है। अब तुम अपने पढ़ने का डौल और कहीं कर लो।" गुरु गंगादासजी ने उन्हें बहुत समझाया तो निमाई ने कहा, "क्या करूँ गुरुदेव, मेरा मन मेरे वश में नहीं है। कृष्ण की चर्चा को छोड़कर मैं इन्हें कुछ नहीं बता सकता।"

धीरे-धीरे पाठशाला का अन्त हो गया। निमाई के कारण नवद्वीप के वैष्णवों में एक नई लहर आ गई। जोरों का कीर्तन होता। निमाई कीर्तन करते-करते नाचने लग जाते। उनके साथ-साथ और भी भक्त नाचने लगते। भक्तों की संख्या बढ़ने लगी। बिना जात-पांत के भेद के सब लोग उनके कीर्तन में शामिल होते थे।

निमाई पंडित का नाम अब चारों ओर फैल गया। बड़े-बड़े विद्वान् और भक्त कीर्तन में शामिल होते। लोग उनको भगवान् कृष्ण का अवतार मानने लगे। कहते हैं, उनके कई भक्तों ने उनके रूप में भगवान कृष्ण के दर्शन किये। एक बार मां को भी उन्होंने विष्णु रूप में दर्शन दिये।

निमाई की माता को बेटे के इस रूप को देखकर

बड़ा दुःख होता। विष्णुप्रिया भी मन-ही-मन हैरान होती। दोनों को डर था कि कहीं कृष्ण के वियोग में निमाई घर न छोड़ दें!

निमाई पंडित के कारण अब घर-घर में हरिनाम की पहुँच होने लगी। कीर्तन-मण्डली बाज़ारों से निकलती। लोग फूलों से रास्ते को सजा देते। बहुत-से लोग अपनी बुराइयों को छोड़कर उनके साथ आ मिले।

बंगाल में उन दिनों कालीपूजा का बहुत प्रचार था। कालीपूजा में बहुत-से पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी। निमाई पंडित इन बुरी बातों के विरोध में ही कृष्ण-भक्ति का सन्देश लेकर खड़े हुए थे।

निमाई के विरोधी उन्हें नीचा दिखाने के उपाय सोचते रहते थे। एक बार उन्होंने काज़ी से शिकायत की कि उनके कीर्तन से हम बड़े परेशान हैं। वह शोर मचाकर रात को सोने नहीं देते और कीर्तन के बहाने बुरे-बुरे काम करते हैं। साथ ही उन्होंने मुसलमानों को भी कृष्णभक्त बना लिया है।

यह सुनते ही काज़ी जलभुन गया। उसने फौरन आज्ञा दी कि कहीं भी कीर्तन नहीं होगा।

भक्तों ने ग्राकर जब काज़ी की यह ग्राज्ञा सुनाई तो निमाई पंडित मुस्कराते हुए बोले, "घबराते क्यों हो ? नगर में ढिंढोरा पिटवा दो कि मैं ग्राज शहर के बाजारों में कीर्त्तन करता हुग्रा काज़ी के मकान के सामने जाऊंगा ग्रौर वहां कीर्त्तन करूंगा। काज़ी साहब के उद्धार का समय ग्रा गया है।"

इस मुनादी को सुनकर लोगों की खुशी की कोई सीमा न रही। लोगों ने नगर के बाजार सजाये। दूसरे मत को माननेवाले लोगों ने भी मकानों को सजाया।

निमाई पंडित ग्रपने भक्तों के साथ कीर्त्तन करते चले। "हरिबोल ! हरिबोल !" की ध्वनि से ग्राकाश गूंज उठा। जलूस कीर्त्तन करता हुग्रा बाजारों से गुजरने लगा। काफी भीड़ थी। बूढ़े, बच्चे ग्रौर जवान सभी "हरिबोल" का नाद करते हुए जलूस में शामिल हो रहे थे। ताल-स्वर के साथ जुलूस कीर्त्तन करता हुग्रा ग्रागे बढ़ रहा था। निमाई प्रभु-भक्ति में लीन होकर नृत्य कर रहे थे। उनकी ग्राखों से कृष्ण-विरह में ग्रांसू बह रहे थे। उन्हें देखकर विरोध करनेवालों के भी हृदय उनके चरणों में झुके जा रहे थे। जनता में काज़ी की ग्राज्ञा के खिलाफ़ जोश पैदा होने लगा। जनता चिल्लाने

लगी, "काज़ी का मकान जला दो, काज़ी को मार दो।" लोग गुस्से में भरे हुए काज़ी के मकान की ओर बढ़ने लगे।

निमाई पंडित कीर्त्तन में मस्त थे। जब भक्तों ने उन्हें लोगों के जोश की बात बतलाई तो उन्होंने कीर्त्तन बन्द करा दिया और गुस्से से भरी हुई जनता के सामने जाकर बोले, "काज़ी का बुरा करनेवाला मेरा बुरा करेगा। मैं काज़ी को प्रेम से जीतना चाहता हूं, डर दिखाकर नहीं। इसलिए आप मेरे काम में रुकावट न डालें।"

प्रभु की मीठी वाणी सुनकर लोग शान्त हो गये।

काज़ी डर के मारे अपने घर में छिपकर बैठ गया था। निमाई ने उसके नौकरों से कहा, "काज़ी साहब को मेरे आने की खबर दो। उनसे कहो कि डर की कोई बात नहीं। वह मुझपर यकीन करें। मेरे होते हुए उनका बाल भी बांका न होगा।"

गांव के नाते काज़ी निमाई के मामा लगते थे। नौकरों के समझाने-बुझाने पर काज़ी बाहर आए।

निमाई पंडित ने प्यार से कहा, "मामाजी, भानजा

मिलने आये और मामा मकान के द्वार बन्द करके अन्दर जा बैठे, यह भी कोई बात हुई !"

भक्ति में डूबकर सब कीर्त्तन करते थे ।

काज़ी ने कहा, "मैं डर से नहीं, शर्म के मारे अन्दर जा बैठा था । मैं अपनी मदद के लिए सेना बुला सकता था, पर जब मैंने अपनी आंखों तुम्हारा कीर्त्तन देखा तो मैं खुद पागल हुआ जा रहा था । तुम तो नारायणरूप हो । तुम्हारे कीर्त्तन में रुकावट डालने का मुझे दुःख है । मैं लोगों के बहकावे में आ गया था ।

अब तुम खूब कीर्त्तन करो, तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।

इतना सुनते ही सबने फिर कीर्त्तन शुरू कर दिया। काज़ी भी उनके साथ शामिल हो गये।

इस घटना से निमाई पंडित का यश खूब बढ़ गया। किन्तु उनके हृदय में एक बड़ा परिवर्तन आने लगा। संन्यास लेने की इच्छा पैदा होने लगी। वह सोचते थे कि मेरे यश और वेश से डाह करनेवालों को सीधे रास्ते पर लाने का केवल एक ही उपाय है और वह है त्याग। त्याग करके ही मैं दुनिया की भलाई में लग सकता हूं। यह इच्छा जब उन्होंने भक्तों, अपनी माता और पत्नी को बताई तो सब रोने लगे। सबने उन्हें समझाने की कोशिश की, पर बेकार। निमाई पंडित चट्टान की तरह अटल थे। बाद में सबने उनकी बात मान ली। एक रात को माता और पत्नी को सोता छोड़ वह संन्यास लेने के लिए घर से निकल पड़े।

: ४ :

घर से निकल कर वह केशव भारती की कुटी पर पहुंचे और उनसे दीक्षा देने की प्रार्थना की। उस समय

निमाई की उम्र चौबीस साल की थी ।

केशव भारती ने उन्हें बहुत समझाया। कहा, "अभी तुम्हारी उम्र छोटी है। तुम्हारे कोई बाल-बच्चा भी नहीं है। इस हालत में तुम्हारे लिए संन्यास लेना ठीक न होगा। जाओ, घर लौट जाओ।" निमाई ने हाथ जोड़ कर कहा, "गुरुदेव, घर में रहते हुए मैं वह काम नहीं कर सकता जो करना चाहता हूं । देश में नास्तिकता, हिंसा और बाम-मार्ग के कारण बड़ी बुरी-बुरी बातें फैल रही हैं । मैं अज्ञान के अंधेरे को दूर करना चाहता हूं। कृष्ण-भक्ति का सन्देश घूम-घूम कर सारे देश को सुनाना चाहता हूं। जात-पांत के बंधनों से लोगों को निकालना चाहता हूं। आप मुझ पर दया करें, मुझे दीक्षा दें।"

केशव भारती कुछ सोचते हुए बोले, "अच्छा निमाई पंडित, एक शर्त पर मैं तुम्हें दीक्षा दे सकता हूं। तुम अपनी माता और पत्नी से आज्ञा ले आओ।"

निमाई ने कहा, "गुरुदेव, उन दोनों ने मुझे आज्ञा दे दी है। मैं उनसे पहले ही पूछ चुका हूँ।"

निमाई के बहुत कहने पर केशव भारती उन्हें दीक्षा देने को तैयार हो गये । इतने में निमाई को

ढूँढ़ते हुए नवद्वीप के अनेक भक्त वहां आ पहुंचे। वह बड़ा ही दिल को हिला देनेवाला दृश्य था। यह सुन कर कि एक युवक पत्नी और माँ को छोड़कर संन्यासी बन रहा है, आसपास के गांव के नर-नारी इकट्ठे हो गये। वे उन्हें मना करते और केशव भारती को गालियां देते। कोई भी नाई निमाई पंडित के सुन्दर बाल काटने को तैयार न होता।

तब निमाई ने अपनी मधुर वाणी से सबको शान्त किया। नाई ने उनके केश काटे। पर उसने कसम खा ली कि आगे से वह यह काम नहीं करेगा। वह कृष्ण-भक्त हो गया। निमाई पंडित अब चैतन्य कहलाने लगे।

घर के झंझटों से दूर चैतन्यप्रभु अब दुनिया की भलाई में लगे। कृष्ण-नाम की महिमा बतलाते हुए वह जगह-जगह घूमने लगे।

कृष्ण-भक्ति के गीत गाते हुए वह जनता के हृदय में भगवत् भक्ति की भावना भरने लगे। उन दिनों अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग राजाओं के राज्य थे, किन्तु चैतन्यप्रभु इतने मशहूर थे कि उन्हें कहीं भी जाने की रोक-टोक न थी। एक यात्रा में उन्हें पता

लगा कि उनके बड़े भाई विश्वरूप दो वर्ष साधु रहकर मर गये।

साधु बनने के बाद दो बार चैतन्य अपनी माता से मिले। वैसे माता के समाचार वह समय-समय पर अपने भक्तों से पूछते रहते थे।

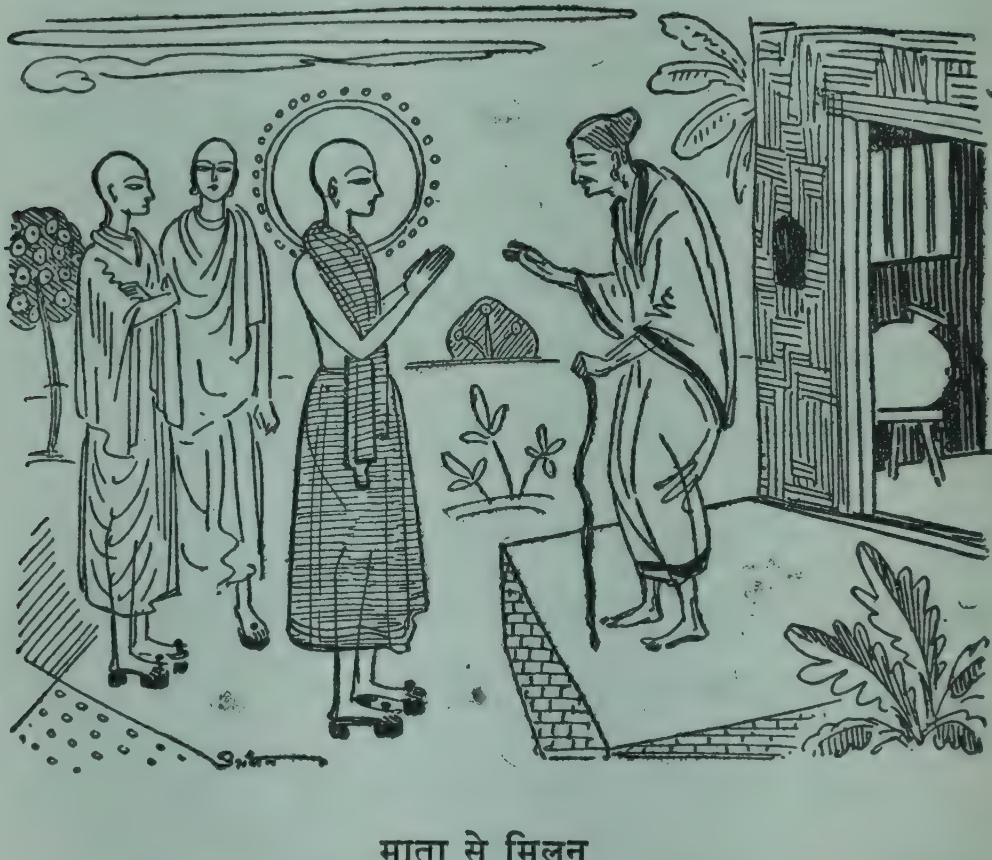

माता से मिलन

एक बार जब वह नवद्वीप गये तो विष्णुप्रिया उनसे मिली। चैतन्य बोले, "देवी, इस संन्यासी के लिए क्या आज्ञा है?"

विष्णुप्रिया ने सिर झुकाकर कहा, "महाराज, मुझे आपके खड़ाऊं चाहिए।" चैतन्यप्रभु ने खड़ाऊं दे दिये। बाद में विष्णुप्रिया ने कृष्ण-भक्ति की दीक्षा ले ली।

एक बार चैतन्यप्रभु अकेले ही चोरानन्दी वन में जा रहे थे। उस वन में मशहूर डाकू नौरोज़ी रहता था। उसका नाम सुनकर लोग कांप उठते थे। चैतन्य को इस वन में से जाने के लिए लोगों ने बहुत मना किया, पर उनके मन में नौरोजी को सही रास्ते पर लाने की धुन समाई हुई थी।

नौरोजी उनको देखते ही उनका भक्त हो गया और वह संन्यासी बनकर महाप्रभु के साथ रहने लगा। बाद में उसकी मृत्यु हो गई।

एक बार झील के किनारे कुछ साधु बैठे थे। चैतन्य ने उनसे पूछा, "तुमने मेरा कृष्ण तो नहीं देखा?" एक साधु ने मज़ाक में कह दिया, "हां-हां, वह अभी-अभी इस झील में गया है।"

इतना सुनते ही चैतन्यप्रभु झील में कूद पड़े। दूसरे साधुओं ने बड़ी कठिनाई से उन्हें झील से बाहर निकाला। इसी तरह कृष्ण-प्रेम में वह एक बार समुद्र में कूद पड़े थे। मल्लाहों के जाल में फँस जाने से बच गये। तीन-चार दिन के बाद उन्हें होश आया।

MYSORE-1

चैतन्यप्रभु अधिकतर जगन्नाथपुरी में रहते थे और जगन्नाथजी की मूर्त्ति के आगे खड़े होकर घंटों रोया करते थे।

४८ वर्ष की उम्र में रथ-यात्रा के दिन उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। उनका शरीर चला गया, पर उनका नाम सदा अमर रहेगा। भक्ति की उन्होंने जो धारा बहाई, वह कभी नहीं सूखेगी और लोगों को हमेशा पवित्र करती रहेगी।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	५)	भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	।)
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग	,,	५॥)	राजघाट की संनिधि में		॥=)
गीता-माता	,,	४)	विचार-पोथी	,,	१)
पंद्रह अगस्त के बाद		१॥), २)	सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	।)
धर्मनीति	,,	१॥), २)	जमाने की माँग	,,	=)
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३॥)	मेरी कहानी	(नेहरू)	८)
मेरे समकालीन	,,	५)	,, संक्षिप्त	,,	२॥)
आत्म-संयम	,,	३)	हिन्दुस्तान की समस्याएं	,,	२)
गीता-बोध	,,	॥)	लड़खड़ाती दुनिया	,,	२)
अनासक्तियोग	,,	१॥)	राष्ट्रपिता	,,	२)
ग्राम-सेवा	,,	।=)	राजनीति से दूर	,,	२)
मंगल-प्रभात	,,	।=)	हमारी समस्याएँ	(१ भाग)	॥।)
सर्वोदय	,,	।=)	विश्व-इतिहास की झलक		२१)
नीति-धर्म	,,	।=)	सं० हिन्दुस्तान की कहानी		५)
आश्रमवासियों से	,,	।=)	नया भारत	,,	।)
हमारी मांग	,,	१)	आजादी के आठ साल	,,	।)
सत्यवीर की कथा	,,	।)	गांधीजी की देन	(रा० प्र०)	१॥)
संक्षिप्त आत्मकथा	,,	१) १॥)	गांधी-मार्ग	,,	=)
हिंद-स्वराज्य	,,	॥।)	महाभारत-कथा	(राजाजी)	५)
अनीति की राह पर	,,	१)	कुब्जा-सुन्दरी	,,	२)
बापू की सीख	,,	॥)	शिशु-पालन	,,	॥)
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१=)	मैं भूल नहीं सकता	,,	२॥)
आज का विचार (दो भाग)		॥।)	कारावास-कहानी	(सु. नै.)	१०)
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१॥।)	गांधी की कहानी	(लु० फि०)	४)
गांधीजी ने कहा था ३ भाग		॥।)	भारत-विभाजन की कहानी		४)
शान्ति-यात्रा	(विनोबा)	१॥)	बापू के चरणों में		२॥)
विनोबा के विचार : २ भाग		३)	इंग्लैंड में गाँधीजी		२)
गीता-प्रवचन	,,	१),१॥)	बा, बापू और भाई		॥)
जीवन और शिक्षण	,,	२)	गांधी-विचार-दोहन		१॥)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१)	सर्वोदय-तत्व-दर्शन		७)
ईशावास्यवृत्ति	,,	॥।)	सत्याग्रह-मीमांसा		३॥)
ईशावास्योपनिषद्	,,	=)	बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१)
सर्वोदय-विचार	,,	१=)	सन्त-सुधासार	,,	११)
स्वराज्य-शास्त्र	,,	॥)	श्रद्धाकरण	,,	१)
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	।=)	अयोध्याकाण्ड	,,	१)

1614

भागवत-धर्म (ह० उ०)	५॥)	एक आदर्श महिला	१)
श्रेयार्थी जमनालालजी ,,	६॥)	राष्ट्रीय-गीत	।)
स्वतन्त्रता की ओर ,,	४)	तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१॥)
बापू के आश्रम में ,,	१)	थेरी-गाथाएं	१॥)
मानवता के झरने (माव०)	१॥)	बुद्ध और बौद्ध साधक	१॥)
बापू (घ० बिड़ला)	२)	जातक-कथा (आनंद कौ०)	२॥)
रूप और स्वरूप ,,	॥=)	हमारे गाँव की कहानी	१॥)
डायरी के पन्ने ,,	१)	खादी द्वारा ग्राम-विकास	॥।)
ध्रुवोपाख्यान ,,	।)	साग-भाजी की खेती	३)
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१)	ग्राम-सुधार	१।)
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१॥)	पशुओं का इलाज	॥)
प्रेम में भगवान ,,	२)	चारादाना	।)
जीवन-साधना ,,	१।)	रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१=)
कलवार की करतूत ,,	।)	रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३)
हमारे जमाने की गुलामी ,,	॥।)	नवयुवकों से दो बातें ,,	।=)
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१)	पुरुषार्थ (डा० भगवान्‌दास)	६)
बालकों का विवेक ,,	॥)	काश्मीर पर हमला	२)
हम करें क्या ? ,,	३॥)	शिष्टाचार	॥)
धर्म और सदाचार ,,	१।)	तट के बंधन	२)
अँधेरे में उजाला ,,	१॥)	भारतीय संस्कृति	३॥)
ईसा की सिखावन ,,	१)	आधुनिक भारत	५)
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२)	फलों की खेती	२॥)
लोक-जीवन (कालेलकर)	३॥)	मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार	॥)
साहित्य और जीवन	२)	नवजागरण का इतिहास	३)
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१)	गांधीजी की छत्रछाया में १॥)	२॥)
हिमालय की गोद में ,,	२)	भागवत्-कथा	३॥)
कहावतों की कहानियाँ ,,	२)	जय अमरनाथ	१॥)
राजनीति प्रवेशिका	१)	हमारी लोककथाएँ	१॥)
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	१।)	संस्कृत-साहित्य-सौरभ (२३ पुस्तकें) प्रत्येक	।=)
अशोक के फूल	३)		
जीवन-प्रभात	५)	समाज-विकास-माला (४४ पुस्तकें) प्रत्येक	।=)
कां० का इतिहास २ भाग	२०)		
पंचदशी	१॥)	कृषि-ज्ञान-कोष	४)
सप्तदशी	२)	प्रकाश की बातें	१॥)
रीढ़ की हड्डी	१॥)	धरती और आकाश	१।)
अमिट रेखाएं	३)	मेरी जीवन-यात्रा	२)

ACC. No.: 9745

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियाँ
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियाँ
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज़में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो सेवा क्यों ?
४०. कैलास मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

१४

छः आना